❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।
अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 अगस्त, 2017 से रविवार 3 सितम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

''लव जिहाद'' के रास्ते में सुप्रीम कोर्ट का हथौड़ा

हाल ही में एक अमेरिकी थिंकर और ब्लॉगर पामेला गेलर ने भारत में लव जिहाद का शिकार हो रही लड़कियों को लेकर एक बार फिर सुर्खियों में हैं। दरअसल बीते वर्ष मुस्लिम युवक शफीन पर हिन्दू लड़की हादिया को फुसलाकर शादी करने और जबरन उसका धर्म परिवर्तन कराने वाले मामले को केरल उच्च न्यायालय ने इसे लव जिहाद करार देते हुए शादी को निरस्त कर दिया था। हालाँकि लड़की कोर्ट में कहती रही कि उस पर कोई दबाव नहीं, उसने अपनी मर्जी से विवाह किया है। लेकिन कोर्ट ने उसकी एक न सुनी और इस निकाह को निरस्त कर दिया था। इसके बाद आरोपी युवक शफीन इस मामले को उच्चतम न्यायालय ले आया था। उच्चतम न्यायालय में लड़के पक्ष के वकील कपिल सिब्बल की लाख अपील के बाद भी उच्चतम न्यायालय ने हिन्दू महिला के धर्मान्तरण और मुस्लिम व्यक्ति से उसकी शादी के मामले की जांच एनआईए से कराने का आदेश दिया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी एनआईए ने लव जिहाद के कुछ मामलों में जांच के बाद यह कहा है कि धर्मांतरण के बाद महिलाओं को खूंखार आतंकी संगठन आईएस में शामिल होने के लिए कथित तौर पर सीरिया भेजा जा रहा था।

मतलब मामले को कैसे भी समझा जा सकता है जैसे पहले किसी अन्य धर्म की युवती से प्रेम उसके बाद विवाह और विवाह के बाद उसका ब्रेनवाश कर उसे सीरिया में कुख्यात आतंकी संगठन आई एस के लिए भेज दो। वहां उसका इस्तेमाल मानव बम या आतंकी लड़ाकों के लिए यौनदासी के रूप में किया जा सकता है। भारत सरकार के एक अधिकारी ने कहा है कि एक हिन्दू महिला के धर्मांतरण और मुस्लिम व्यक्ति से उसकी शादी की एनआईए जांच में केरल में हाल में सामने आए ऐसे अन्य संदिग्ध मामलों को भी शामिल किया जा सकता है। आतंक रोधी जांच एजेंसी ने दावा किया कि केरल में यह कोई इक्का-दुक्का घटना नहीं है, बल्कि यह एक सिलसिला सा चल रहा है।

......पहले किसी अन्य धर्म की युवती से प्रेम उसके बाद विवाह और विवाह के बाद उसका ब्रेनवाश कर उसे सीरिया में कुख्यात आतंकी संगठन आई एस के लिए भेज दो। वहां उसका इस्तेमाल मानव बम या आतंकी लड़ाकों के लिए यौनदासी के रूप में किया जा सकता है । भारत सरकार के एक अधिकारी ने कहा है कि एक हिन्दू महिला के धर्मांतरण और मुस्लिम व्यक्ति से उसकी शादी की एनआईए जांच में केरल में हाल में सामने आए ऐसे अन्य संदिग्ध मामलों को भी शामिल किया जा सकता है। आतंक रोधी जांच एजेंसी ने दावा किया कि केरल में यह कोई इक्का-दुक्का घटना नहीं है, बल्कि यह एक सिलसिला सा चल रहा है। .....

इस कथित लव जिहाद को ज्यादा समझने के लिए थोड़ा अतीत में जाना होगा। 26 जून 2006 केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री ओमान चांडी द्वारा केरल विधानसभा में दिए एक लिखित जवाब से केरल का हिन्दू समाज स्तब्ध रह गया था जब एक सवाल के जवाब में, चांडी ने बताया था कि 2006 से 2012 तक, राज्य में 7713 लोग इस्लाम में धर्मान्तरित किए गए हैं। इनमें से कुल धर्मान्तरित 2688 महिलाओं में से 2196 हिन्दू थीं और 492 ईसाई लेकिन इस रपट के तुरंत बाद मुस्लिम गुटों के दबाव पर राज्य सरकार ने अदालत में प्रतिवेदन दर्ज करके उसका ठीक उलट कहा कि ''लव जिहाद'' जैसी कोई चीज नहीं है।

जबकि उसी दौरान केरल से प्रकाशित एक पत्रिका में साफ-साफ छपा था कि ''लव जिहाद'' केरल के संभ्रांत हिन्दू परिवारों और रईस ईसाई परिवारों को भी बेखटके निशाना बना रहा है। इसके लिए व्यावसायिक कालेजों और तकनीकी शिक्षण संस्थानों पर नजर रखी जाती है। मुस्लिम गुट मुस्लिम लड़कों को तमाम तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम करने और उनमें गैर मुस्लिम लड़कियों को इनाम देने को उकसाते हैं ताकि उन्हें फांसा जा सके। जो लड़कियां उनकी तरफ आकर्षित होती हैं उन्हें मुस्लिम लड़कों के साथ घुलने-मिलने का भरपूर मौका दिया जाता है। इन शुरुआती तैयारियों के बाद, ''लव जिहाद'' के खाके को क्रियान्वित किया जाता है। जैसे ही इस पत्रिका की प्रतियां छपकर आई, पूरे केरल में बड़ी संख्या में मुस्लिम कट्टरवादियों ने इन्हें खरीदा और फाड़ कर जला डाला।

– शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
6-7-8 अक्तूबर 2017
माण्डले
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमार

आवेदन की अन्तिम तिथि 31 अगस्त, 2017

6, 7, 8 अक्तूबर, 2017
तद्नुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३ सम्वत् २०७४

विस्तृत जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.thearyasamaj.org

-: सम्मेलन स्थल :- अम्बिका मन्दिर परिसर, मांडले, म्यांमार

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया, फिजी एवं न्यूजीलैंड की आर्यसमाजों का

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन आस्ट्रेलिया

तिथियों में आवश्यक परिवर्तन के कारण अब 24-25-26 नवम्बर को आर्यसमाज सैन्ट्रल, न्यू साउथ वेल्स में होगा आयोजन

आर्यसमाज YouTube टीवी चनल : 20 लाख लोगों ने देखा
आप भी देखें सब्सक्राइब करें और अन्यों को प्रेरणा दें
आप अपने कार्यक्रमों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। – महामन्त्री

वेद-स्वाध्याय

शुभ संकल्प ही आएं

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सद्यद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।। ऋ. 1/89/1
ऋषि : **गोतमो राहूगणो पुत्रः।।** देवता - **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **निचृज्जगती।।**

शब्दार्थ - नः भद्राः क्रतवः विश्वतः आयन्तु = हमारे पास श्रेष्ठ ही सङ्कल्प सब ओर से आएं। **अदब्धासः** = जो कभी न दबनेवाले हों **अपरीतासः** = जो किसी से घिरे हुए न हों उद्भिदः और जो उद्भेदन करने वाले हों **यथा देवाः न सदमिद् वृधे असन्** = जिससे कि देवता हमारे लिए सदा उन्नति के लिए होवें **दिवे दिवे अप्रायुवो रक्षितारश्च असन्** = और प्रतिदिन प्रमाद रहित होकर हमारे रक्षक होवें।

विनय - ''मनुष्य क्रतुमय (सङ्कल्पमय) है, अतः मनुष्य को क्रतु अर्थात् सङ्कल्प व अध्यवसाय करना चाहिए'', परन्तु यह सङ्कल्प हम किस प्रकार से करें?

पहले तो हमारे क्रतु (सङ्कल्प) 'भद्राः' होने चाहिए। हम श्रेष्ठ सङ्कल्प ही करें सद्यिद् कल्याणकारी सङ्कल्प ही करें। जो अभद्र सङ्कल्प हैं उन्हें देवता स्वीकृत नहीं करते, अतएव उनसे कुछ बनता नहीं। इसलिए हमारा यह आग्रह है कि हमारे पास शुभ सङ्कल्प ही आवें जिससे देवता अर्थात् संसार को चलाने वाली ईश्वरीय शक्तियां हमें उन्नत करती रहें, परन्तु सङ्कल्पों के केवल शुभ होने से ही काम नहीं चलेगा, ये हमारे शुभ सङ्कल्प बलवान् भी होने चाहिए। ये 'अदब्ध' हों, किसी विरोधी शक्ति से दबनेवाले न हों और फिर ये सङ्कल्प उद्भेदन करने वाले हों, अर्थात् मार्ग की सब विघ्न-बाधाओं का उद्भेदन करते हुए, सब गुत्थियों को सुलझाते हुए और सब बन्द किवाड़ों को खोलते हुए सफलता तक पहुंचाने वाले हों। हमारे शुभ सङ्कल्पों में ऐसा बल भी चाहिए और ये सङ्कल्प (परीत) पहले से घिरे हुए भी, अर्थात् किसी बड़ी अच्छाई के विरोधी भी नहीं होने चाहिएं, हमारे सङ्कल्प किसी भी महान् सिद्धान्त में हस्तक्षेप करने वाले भी नहीं होने चाहिए। यदि ऐसा होगा, तो भी हमारे सङ्कल्प जगत् के देवों द्वारा प्रतिहत हो जाएंगे, मारे जाएंगे। इसलिए आज से हममें शुभ और ऐसे बलवान् सङ्कल्प ही आवें जिससे कि (इन सङ्कल्पों के ईश्वरीय नियमों के अनुकूल होने के कारण) देवता हमारी सदा उन्नति कराते जाएं और दिन-रात अप्रमाद होकर हमारे रक्षक बने रहें। प्रभु के ये देव तो हमारी उन्नति के लिए ही हैं और निरन्तर बिना भूल-चूक के हमारी रक्षा करने को तैयार हैं, पर हम भी बड़े-बड़े अभद्र सङ्कल्प करके या यूं ही निर्बल-से बहुत-से सङ्कल्प करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि इन देवों की बड़ी भारी सहायता पाने से अपने-आपको वञ्चित कर लेते हैं। इसलिए आज से केवल भद्र निश्चय ही हममे आवें तथा न दबनेवाले, उद्भेदन करते हुए चले जाने वाले ओर अपरीत, महान् भद्र निश्चय ही हममें आवें और चारों ओर से आवें, जिससे कि हम जगत् शासक के देवताओं की अनुकूलता में ही सदा बढ़ते हुए जीवनमार्ग पर चलते जाएं।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

तीन तलाक! आखिर इसमें बदला ही क्या है?

....अब सवाल उठता है कि तलाक तलाक तलाक एक साथ कहने से अब शादी नहीं टूटेगी! अब महिलाओं को क्या नया अधिकार मिला है? दरअसल यह फैसला बहुत ही संतुलित है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण ये है मौखिक तलाक देने का हक अभी भी मुस्लिम समाज के पास सुरक्षित है। बस जरा सा अंतर यह आया कि एक साथ एक समय में कहे तीन तलाक अब मान्य नहीं होंगे लेकिन यह सन्देश कितनी मुस्लिम महिलाओं के पास पहुंचेगा? ....

उर्दू के मशहूर शायर गालिब ने कहा है, ''यह कोई न समझे कि मैं अपनी उदासी के गम में मरता हूँ। जो दुःख मुझको है उसका बयान तो मालूम है, मगर इशारा उस बयान की तरफ करता हूँ'' जमात उलेमा ए हिंद के महासचिव मौलाना महमूद मदनी ने तीन तलाक पर कोर्ट के फैसले के बावजूद कहा है कि ''एक साथ तीन तलाक'' या तलाक-ए-बिद्दत को वैध मानना जारी रहेगा। मदनी ने कहा कि अगर आप सजा देना चाहें तो दें, लेकिन इस तरह से तलाक मान्य होगा। ''हम इस फैसले से सहमत नहीं हैं। हम समझते हैं कि अपना धर्म मानने के मौलिक अधिकार पर भी यह हमला है। निकाह, हलाला और बहुपत्नी प्रथा का बार-बार जिक्र करना इस बात का संकेत है कि अभी और भी हस्तक्षेप के लिए और भी मुद्दे निशाने पर होंगे।''

पिछले दिनों तीन तलाक को लेकर राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में जो स्वतन्त्रता दिवस मनाया जा रहा है वह एक मायने में सही और कई मायनों में गुमराह सा करने वाला है। देश के मीडिया समूह और राजनेताओं ने इस खबर को मुस्लिम महिला की आजादी बताकर जिस तरीके से परोसा उसमें लोगों द्वारा अपनी-अपनी धार्मिक और राजनैतिक हैसियत के अनुसार खूब चटकारे लिए जा रहे हैं। मुस्लिम महिलाओं को लेकर उपजी इस संवेदना के पीछे कुछ-न-कुछ तो जरुर रहा होगा सिवाय एक मदनी के कोई दूसरा स्वर नहीं फूटा?

इस पूरे मामले को समझे तो हुआ यूँ कि बीते साल दो बच्चों की मां 35 वर्षीय मुस्लिम महिला शायरा बानो जब सुप्रीम कोर्ट पहुंचती है तो तीन तलाक के खिलाफ अभियान एक बार फिर जिंदा हो उठता है।

शायरा बानो ने साल 2016 की फरवरी में अपनी याचिका दायर की थी। उसने कहा था कि जब वह अपना इलाज कराने के लिए उत्तराखंड में अपनी मां के घर गई तो उन्हें तलाकनामा मिला। शायरा बानो ने इलाहाबाद में रहने वाले अपने पति और दो बच्चों से मिलने की कई बार गुहार लगाई लेकिन उन्हें हर बार दरकिनार कर दिया गया और उन्हें अपने बच्चों से भी मिलने नहीं दिया गया। इसके बाद शायरा बानो ने सर्वोच्च न्यायालय में अपनी याचिका में इस प्रथा को पूरी तरह प्रतिबंधित करने की मांग उठाई। जबकि शायरा ने ये भी कहा है कि हलाला और कई पत्नियां रखने की प्रथा को भी गैर कानूनी ठहराया जाए।

सुप्रीम कोर्ट में शायरा बानो की इस अपील के बाद देश के मीडिया से लेकर धार्मिक जगत में इस भयंकर कुप्रथा के किले को भेदने के लिए सबने अपने तमामतर साधन अपनाये, किसी ने मौखिक रूप से तो किसी ने न्यायिक रूप से इसमें मुस्लिम महिलाओं की आवाज उठाई और तमाम उठापटक और बहस के बाद आखिर २२ अगस्त को फैसला आया जिसमें सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की खंडपीठ ने ३-२ के बहुमत से यह फैसला सुनाया कि एक साथ तीन तलाक असंवैधानिक है। तीन में से दो जजों ने कहा है कि यह असंवधानिक है। तीसरे जज ने यह कहा है कि चूंकि इस्लाम को मानने वाले इसको खुद गलत मानते हैं और कुरान शरीफ में इसका जिक्र नहीं है इसलिए मैं इसको मान लेता हूं कि यह गलत प्रथा है और इसको खत्म किया जाना चाहिए।

मीडिया ने इतना सुनते ही अखबारों की सुर्खियाँ बना डाला कि तीन तलाक खत्म और मुस्लिम महिला आजाद, जबकि इस मजहबी कानून को यदि भावनात्मक लिहाज से न देखकर न्यायिक प्रक्रिया से देखें तो इसमें कोर्ट ने वही बात दोहराई जिसे मुल्ला मौलवियों का एक बड़ा धड़ा टेलीविजन की बहस से लेकर हर एक सामाजिक धार्मिक मंच पर दोराहा रहा था। मुसलमानों में कोई ऐसा तबका नहीं है जिसने ये कहा हो कि ये प्रथा गुनाह नहीं है। मुसलमानों के हर तबके ने सुप्रीम कोर्ट को यह कहा था कि तीन तलाक एक वक्त पर देना गुनाह है। जब मुस्लिम समुदाय यह खुद मान रहा है कि यह एक गुनाह है और सुप्रीम कोर्ट ने इसको बुनियाद बना कर फैसला दिया है, तो इसे मुस्लिम महिलाओं की स्वतन्त्रता आदि से जोड़कर क्यों देखा जाये? शायद इसके राजनैतिक कारण हो सकते हैं। मौखिक रूप से तीन तलाक था अब भी है और तब तक रहेगा जब तक देश में समान नागरिक आचार संहिता लागू नहीं हो जाती है।

अब सवाल उठता है कि तलाक तलाक तलाक एक साथ कहने से अब शादी नहीं टूटेगी! अब महिलाओं को क्या नया अधिकार मिला है? दरअसल यह फैसला बहुत ही संतुलित है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण यह है मौखिक तलाक देने का हक अभी भी मुस्लिम समाज के पास सुरक्षित है। बस जरा सा अंतर यह आया कि एक साथ एक समय में कहे तीन तलाक अब मान्य नहीं होंगे लेकिन यह सन्देश कितनी मुस्लिम महिलाओं के पास पहुंचेगा? जबकि ऐसे मामले देश की 20 करोड़ मुस्लिम आबादी में गिने चुने ही आते हैं।

इसे कुछ इस तरीके से भी समझ सकते हैं कि तीन तलाक एक वक्त में देने से तलाक नहीं होगा; लेकिन दो और तरीके हैं तलाक के। एक है तलाक-ए-अहसन और दूसरा तलाक-ए-हसन।

तलाक-ए-अहसन में तीन महीने के अंतराल में तलाक दिया जाता है। तलाक-ए-हसन में तीन महीनों के दौरान बारी-बारी से तलाक दिया जाता है। इन दोनों के तहत पति-पत्नी के बीच समझौते की गुंजाइश बनी रहती है। हां अब एक वक्त में तीन तलाक से तलाक नहीं होगा लेकिन यह दो इस्लामी रास्ते अभी भी तलाक देने के लिए खुले हैं और इसमें भारतीय न्यायालय कोई दखल नहीं दे सकता। जो लोग आज इस 1400 साल पुरानी तीन तलाक की प्रथा पर सुप्रीम कोर्ट का हथौड़ा समझ रहे है, उन्हें यह भी समझना होगा, कि आखिर इसमें बदला क्या?

-सम्पादक

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

पाखंड और अंधविश्वास की भेंट चढ़ी 38 जिन्दगी : अब तो संभलें!

डेरा सच्चा सौदा - राम रहीम मामले में हुई मौतों का जिम्मेदार कौन?

शनिवार के दिन का अखबार हिंसा, आगजनी और खून से लथपथ खबरों से भरा था। उपद्रव एक कथित धार्मिक बाबा राम रहीम के उसी आश्रम से जुड़ी एक साध्वी से रेप केस में दोषी करार दिए जाने के बाद उसके भक्तों द्वारा किया गया। इस हिंसा में करीब 30 लोगों की जान गयी, 200 से ज्यादा घायल हुए और हजारों गिरफ्तार भी किये गये। शुक्रवार को हुए घटनाक्रम के बाद हरियाणा सरकार और प्रशासन पर सवाल उठ रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यही है कि धारा 144 लगे होने के बावजूद भी इतनी भारी तादाद में लोगों को इकट्ठा क्यों होने दिया गया? लेकिन यह सिर्फ पुलिस की नाकामी नहीं है बल्कि सरकार की हालात को काबू पाने की इच्छाशक्ति दिखाई नहीं दी है। फैसला आने से एक दिन पहले तक जब भीड़ इकट्ठा हो रही थी तब सरकार के मंत्री भीड़ को शांतिप्रिय भक्त बता रहे थे। सरकारी सम्पत्ति और वाहनों से उठते धुंए के गुबार से ऊँचा यह सवाल भी कि आखिर इन सबका जिम्मेदार कौन?

दरअसल यह मामला आज से 15 साल पहले प्रकाश में आया था। अप्रैल 2002 में राम रहीम की साथी साध्वी ने पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट और तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी को एक शिकायत भेजी थी जिसमें उसने सीधे तौर पर राम रहीम पर यौन शोषण करने का आरोप लगाया था। दिसंबर 2003 में मामले की गंभीरता को देखते हुए राम रहीम पर लगे यौन शोषण के आरोप की जांच सीबीआई को सौंप दी गई। जुलाई 2007 सीबीआई ने शिकायत मिलने के लगभग चार साल बाद सीबीआई की अदालत में मामले की चार्जशीट दाखिल की। जिसके बाद अगस्त 2008 चार्ज शीट फाइल करने

.....पंचकुला की घटना के बाद एक बड़ा सवाल खड़ा हो गया है कि क्या देश सुरक्षित है? क्या देश को दिशा निर्देश देने वाले कुछ तथाकथित आडंबरी लोग हैं, जो राष्ट्र के सीधे-साधे लोगों को कहीं न कहीं दिग्भ्रमित कर राष्ट्र की आर्थिक व जनहानि करते जा रहे हैं?....

के एक साल बाद केस का ट्रायल शुरू हुआ लम्बे ट्रायल के बाद आखिरकार अगस्त 2017 में अदालत द्वारा माना गया कि दोषी बाबा ने साध्वी का यौन शोषण किया है।

अब सोचिये! किसी महिला का बलात्कार हुआ तो आप किसके लिए सड़क पर उतरेंगे? बलात्कारी के लिए या जिसका बलात्कार हुआ हो उसके लिए? लेकिन यहाँ सब उल्टा दिख रहा है। जैसे ही डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख गुरमीत राम रहीम को पंचकुला की विशेष अदालत ने रेप के मामले में दोषी करार दिया। इसके बाद डेरे के समर्थकों ने हिंसक प्रदर्शन शुरू कर दिए। हिंसा सिर्फ हरियाणा तक ही सीमित नहीं रही बल्कि पंजाब के कई जिलों के अलावा चार राज्यों में हिंसा और तोड़फोड़ जमकर हुई है।

आखिर क्या वजह है कि बलात्कार जैसे गंभीर अपराध में अदालत द्वारा दोषी करार देने के बाद भी समर्थक यह मानने को तैयार नहीं होते कि उनके गुरु ने कुछ गलत किया है? चंद्रास्वामी, आसाराम बापू, नित्यानंद स्वामी, रामपाल अब रामरहीम गुरमीत इन तथाकथित बाबाओं पर शर्मनाक अपराधों के दोष सिद्ध होने के बाद भी इनके अंधभक्त यह मानने को तैयार नहीं कि दोषी बाबाओं ने कोई अपराध किया है।

इसके कई कारण हैं एक तो बाबाओं और उनके आश्रमों पर लोगों की जो आस्था होती है, वह विचारधारा में बदल जाती है। उन्हें लगता है कि हम जो कर रहे हैं, सच्चाई और धर्म के लिए कर रहे हैं। दूसरा लोगों को लगता है कि उनके बाबा पर जो आरोप लगे हैं, वे सिर्फ बाबा के खिलाफ नहीं बल्कि हमारे समाज पर लगे हैं और इन आरोपों से अपने समाज, अपने डेरे को बचाना है। दूसरा लोग खुद को धार्मिक और अपने बाबाओं को चमत्कारी, शक्तिशाली, दु:ख-सुख हरने वाला अपनी सभी परेशानी को जड़ से मिटाने वाला समझ लेते हैं। ये अंधभक्ति इतनी चरम पर होती है कि लोग अपनी सोचने समझने वाली शक्ति इन बाबाओं के हवाले तक कर देते हैं।

तीसरा हमारे सामाजिक जीवन में सुख दु:ख आदि आते-जाते रहते हैं कई बार जब लोगों की समस्याएं सही ढंग से हल नहीं होतीं या उनकी आशा के अनुरूप हल नहीं होता तो वे धार्मिक या आध्यात्मिक रास्ता अपनाने लगते हैं। हैरानी की बात है कि वे बाबाओं से इन समस्याओं को हल करवाने जाते हैं। उन्हें लगता है कि यही एक रास्ता है और उनका बाबा कोई मसीहा है। आश्रमों और डेरों में मुफ्त भोजन और स्वर्ग जाने के आशीर्वाद की लालसा भी लोगों को इन बाबाओं की ओर खींच लाती है। एक किस्म से भोले-भाले लोगों के बीच चुपचाप अपराधियों तक को शरण देने का कार्य किया जाता है।

चूंकि ऐसे मामलों को लोग धर्म से जुड़ा महसूस करते हैं जबकि इनका धर्म से दूर-दूर का कोई वास्ता नहीं होता लेकिन फिर भी एक दूसरे को धर्म से जुड़ा होने का दिखावा या फिर अपने आसपास के समाज को यह दिखाने की होड़ सी लगी रहती है कि देखो हम फला बाबा से जुड़े हैं, हम बड़े धार्मिक हैं फलां जगह के सत्संग कर आये हैं। एक किस्म से कहा जाये इन चर्चाओं से अपनी-अपनी धार्मिक संतोष की भावना को मजबूत करते हैं। जब कोई कानून या समाज इनकी इस कथित धार्मिक भावना पर प्रश्न खड़ा करता है तो यह लोग उग्र होकर हिंसक कार्यों को अंजाम देने से नहीं हिचकते। उन्हें लगता है कि वे तो गलती कर ही नहीं सकते।

लेकिन पंचकुला की घटना के बाद एक बड़ा सवाल खड़ा हो गया है कि क्या देश सुरक्षित है? क्या देश को दिशा निर्देश देने वाले कुछ तथाकथित आडंबरी लोग हैं, जो राष्ट्र के सीधे-साधे लोगों को कहीं न कहीं दिग्भ्रमित कर राष्ट्र की आर्थिक व जनहानि करते जा रहे हैं? यह घटना भारत में एक विशेष समुदाय में न होकर हिंदुस्तान में सभी संप्रदाय में हावी होती जा रही है। आज जो लोग देश को आर्थिक दृष्टि से मजबूत करते हैं या वह देश का भविष्य हैं वह आंखें मूंदकर ऐसे आडंबरी लोगों पर विश्वास कर देशद्रोही हरकतों में उनका साथ दे रहे हैं। आज हम गर्व से कहते हैं हम सुरक्षित हैं लेकिन जिस तरह की स्थितियां देश में प्रभावी हो रही हैं क्या कल के दिन इन तथाकथित आडंबरों के अनुयाई होने के बाद हम अपना और अपनी आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं?

हमारा अंतिम प्रश्न राष्ट्र के सभी लोगों से है जब कोई बाबा एक फतवा या आदेश जारी करता है तो लोग उसका अनुपालन तुरंत हैं और करते अपने जीवन की कमाई गई पूरी पूंजी को दांव में लगा देते हैं। क्या उन तथाकथित आडंबरी लोगों द्वारा हमारा भला हो रहा है। केवल हिंसा, आगजनी सरकारी व निजी सम्पत्ति और आर्थिक हानि के अलावा कुछ मिला हो तो समीक्षा करें अगर नहीं तो जरूर सोचें बेवकूफ कौन? - ***राजीव चौधरी***

बोध कथा

उपनिषदों का प्रथम सन्देश - दृढ़ संकल्प

उपनिषदों का सबसे प्रथम सन्देश है-दृढ़ संकल्प। जो भी करना है, दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ो, अवश्य सफलता मिलेगी। इस क्रम में मैं आपको मूलशंकर की कथा सुना रहा हूं। दृढ़ संकल्प करके वे घर से निकले कि सच्चे शिव के दर्शन पाऊंगा। निकल पड़े घर से। परन्तु उनके पिता तो उन्हें बांधना चाहते थे। वे भी स्थान-स्थान पर तलाश करने लगे। अन्त में सिद्धपुर के मेले में उन्हें पकड़ लिया। उन्हें फुसलाया, डराया-धमकाया और जब देखा कि मूलशंकर किसी प्रकार नहीं मानते तो कितने ही सैनिकों के पहरे में उसे कैद कर लिया। सैनिकों से कहा-''देखो, यह भागने न पाये!''

सैनिक पहरा देने लगे। रात्रि हो गई। मूलशंकर जाग रहा है। चौकीदार भी जाग रहे हैं। दूसरी रात आ गई। मूलशंकर सोया नहीं। चौकीदार भी सावधान थे। तीसरी रात आ गई, मगर मूलशंकर अब भी जाग रहा है। पहरेदारों ने कहा-''यह तो कहीं नहीं जाता। जाने का प्रयत्न भी नहीं करता। यह जायेगा नहीं।'' थके हुए थे, ऊंघने लगे। मूलशंकर ने देखा तो सोचा-'अब समय है।' मन-ही-मन कहा-'मूलशंकर, भाग सके तो भाग, नहीं तो फिर शायद अवसर न मिले।' यह सोचा और चुपके से पुन: भाग निकले।

यह है दृढ़ संकल्प की बात! यदि मूलशंकर का दृढ़ संकल्प न होता तो वह सोचता-अब क्या करें? भाग गये थे, पकड़े गये। फिर विवाह ही करा ले। अन्य लोग भी तो कराते हैं। परन्तु मूलशंकर ने ऐसा नहीं सोचा। उसके हृदय में एक लगन थी कि सच्चे शिव के दर्शन करने हैं। अन्तत: मूलशंकर को भी सच्चे शिव के दर्शन पाने में सफलता हुई और यह सफलता पा चुके तो हृदय ने कहा-'दयानन्द, इस अमृत को अकेला न लूट, इस संसार का भी ध्यान कर। जो दु:खी है, उसके पास जा। यह अमृत उसको भी दे।' तब वे आ गये। यह है दृढ़ संकल्प का परिणाम!

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

जागो प्यारे आर्यो! करो वेद प्रचार

भारत की सुनकर व्यथा, दुनियां है हैरान। ढोंगी राम रहीम ने किया बड़ा नुकसान।।
किया बड़ा नुकसान, रेल, बस, मनुष्य जलाए। गुंडों का उत्पात, देख सज्जन घबराए।।
पुलिस फौज लाचार, काम न नेता आए। मरे लोग निर्दोष, नहीं जाने बतलाए।।
सच्चाई तो है यही, नेता हैं खुदगर्ज। करते हैं, उपचार जो, बिन पहचाने मर्ज।।
बिन पहचाने मर्ज, दिखाते हैं नादानी। जिनके दिल में भरी हुई है बेईमानी।।
उन्हे चाहिए वोट, स्वार्थी हैं अज्ञानी। कुर्सी से है प्यार, कराते हैं शैतानी।।
ढोंगी राम रहीम का, मचा हुआ था शोर। राम पाल शठ् की तरह, लगा रहा था जोर।।
लगा राह था जोर, कुकर्मी भ्रष्टाचारी। जालिम के ये साथ, यहां लाखों नर-नारी।।
हरियाणा, पंजाब ओर यह दिल्ली सारी। तीन राज्य में दुष्ट-समर्थक उसके भारी।।
कुछ नेता भी शिष्य हैं, ढोंगी के लो जान। मूढ़ नास्तिक देश का, करते हैं नुकसान।।
करते हैं नुकसान, देश को कौन बचाए। अचरज की है बात, बाढ़ खेतों को खाए।।
जनता है न समझ, चाल में आ जाती है। इसीलिए तो नहीं, बुराई रुक पाती है।।
जागो प्यारे आर्यो! करो वेद प्रचार। बिना वेद प्रचार के होगा नहीं सुधार।।
होगा नहीं सुधार, सकल अज्ञान मिटाओ। बनो देव दयानन्द, विश्व को आर्य बनाओ।।
करो परस्पर मेल, फूट का रोग भगाओ। 'नन्दलाल' अब राजनीति में खुलकर आओ।।

- ***नन्दलाल 'निर्भय', ग्रा.+पो. बहीन, पलवल (हरि.)***

पुण्य तिथि
29 अगस्त पर विशेष

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय : प्रेरक स्मरण

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

हिन्दी साहित्य को अपनी दार्शनिक कृतियों से समृद्ध करने वाले महान् लेखक तथा वैदिक धर्म की उदात्त शिक्षाओं को ग्रहण करके स्वयं को श्रेयपथ का अनुगामी बनाने वाले पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म 6 सितम्बर 1881 को एटा जिले के नदरई ग्राम में, लाला कुञ्जबिहारी लाल के यहां हुआ था। यह ग्राम काली नदी के तट पर बसा हुआ है।

मैट्रिक करने के पश्चात् वे बिजनौर में अध्यापक बन गए। अपने स्वाध्याय को जारी रखते हुए 1908 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में उन्होंने अंग्रेजी साहित्य और दर्शन में एम.ए. किया।

जिस समय वे 'टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, इलाहाबाद' में अध्यापन कार्य का प्रशिक्षण ले रहे थे, उस समय हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचंद उनके सहपाठी और मित्र थे। दोनों में अनेक समानताएं थी। उपाध्याय जी और प्रेमचंद दोनों ही प्रारम्भिक जीवन में अध्यापक रहे। दोनों का अध्ययन और लेखन से बराबर लगाव रहा। यह दूसरी बात है कि प्रेमचंद हिन्दी के प्रख्यात कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में विख्यात हुए, उपाध्याय जी को

....आर्य समाज के सम्पर्क में आने और वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान् बनाने के लिए उपाध्याय जी ने स्वामी दर्शनानन्द को श्रेय दिया। धीरे-धीरे आर्य समाज के साथ उनका सम्बन्ध घनिष्ठ होता गया। उन्होंने अनुभव किया कि सरकारी सेवा में रहने की अपेक्षा आर्य समाज की किसी शिक्षण-संस्था में रहकर कार्य करने से वे धर्म और समाज की अधिक सेवा कर सकेंगे। ....

.....1941 से 1944 तक उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता की। इस अवधि में समस्त प्रदेश में घूमकर उन्होंने सभा के संगठन को सुदृढ़ बनाया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी रहे। 1946 से 1951 तक उन्होंने आर्यों की इस सर्वोच्च सभा की सेवा की।....

अपनी दार्शनिक कृतियों के कारण ख्याति मिली। प्रेमचंद भी अपने सरकारी सेवा-काल के आरम्भिक वर्षों में आर्य समाज से जुड़े रहे और उपाध्याय जी का तो समस्त जीवन ही आर्य समाज के लिए समर्पित था।

आर्य समाज के सम्पर्क में आने और वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान् बनाने के लिए उपाध्याय जी ने स्वामी दर्शनानन्द को श्रेय दिया है। धीरे-धीरे आर्य समाज के साथ उनका सम्बन्ध घनिष्ठ होता गया। उन्होंने अनुभव किया कि सरकारी सेवा में रहने की अपेक्षा आर्य समाज की किसी शिक्षण-संस्था में रहकर कार्य करने से वे धर्म और समाज की अधिक सेवा कर सकेंगे। इस विचार के आने पर उन्होंने सरकारी पैंशन का प्रलोभन भी छोड़ दिया और डी.ए.वी. हाई स्कूल प्रयाग के मुख्याध्यापक बन गए। 1918 से 1936 तक वे इस विद्यालय के प्रधानाचार्य रहे। आर्य समाज के कार्यों में वे निरन्तर भाग लेते रहे। 1925 में उन्हें राजाराम हाई स्कूल कोल्हापुर के आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। कुछ काल तक वहां रहकर वे पुनः अपने प्रान्त में आ गए।

यद्यपि उपाध्याय जी का प्रमुख क्षेत्र लेखन ही था, किन्तु आर्य समाज की संगठनात्मक प्रवृत्तियों से भी वे निरन्तर जुड़े रहे। 1941 से 1944 तक उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता की। इस अवधि में समस्त प्रदेश में घूमकर उन्होंने सभा के संगठन को सुदृढ़ बनाया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी रहे। 1946 से 1951 तक उन्होंने आर्यों की इस सर्वोच्च सभा की सेवा की।

उपाध्याय जी की सिद्धान्त-निष्ठा तथा उनके प्रचार-प्रणाली से प्रभावित होकर, 1950 में उन्हें दक्षिण अफ्रीका में आमंत्रित किया गया। अगले वर्ष 1951 में उन्होंने बर्मा, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड का भ्रमण किया। अपने व्याख्यानों के द्वारा प्रवासी भारतीयों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

उपाध्याय जी कलम के धनी थे। जीवन के अन्तिम क्षण तक वे अध्ययन और लेखन से जुड़े रहे। 1956 में जब मथुरा में ऋषि दयानन्द की दीक्षा-शताब्दी मनाई गई तब उपाध्याय जी की साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य में आर्य जगत की ओर से उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में यह समारोह अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। 29 अगस्त 1968 को 87 वर्ष की आयु में उपाध्याय जी का निधन हुआ।

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय अपने साहित्य के लिए चिर-स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने 'अद्वैतवाद' 'आस्तिकवाद', 'जीवात्मा' तथा 'शांकर भाष्यालोचन' आदि दार्शनिक विषयों पर अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। उनकी पुस्तक 'आस्तिकवाद' को अत्यन्त ख्याति मिली। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इसे 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' से सम्मानित किया। शतपथ तथा ऐतरेय ब्राह्मण, मनुस्मृति तथा ईशोपनिषद् के सुगम भाष्य भी उन्होंने लिखे।

उपाध्याय जी हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा संस्कृत, इन चारों भाषाओं में सफलता पूर्वक लिख सकते थे। 'वैदिक कल्चर', 'फिलासफी ऑफ दयानन्द', 'वर्कशिप' आदि उनके उत्कृष्ट ग्रन्थ हैं जो अंग्रेजी में लिखे गए। दो खण्डों में 'आर्योदय' शीर्षक सुन्दर संस्कृत-काव्य की रचना की। इसमें भारत के क्रमबद्ध इतिहास के विवेचन के साथ ऋषि दयानन्द के जीवन को श्लोकबद्ध किया गया है।

उपाध्याय जी ने शताधिक ट्रैक्ट लिखकर वैदिक धर्म के प्रचार में अपना बहुमूल्य योगदान किया। ये ट्रैक्ट इतने लोकप्रिय हुए कि अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगला आदि अनेक भाषाओं में उनके अनुवाद भी प्रकाशित हुए। एक गणना के अनुसार ये ट्रैक्ट 40 लाख से अधिक संख्या में छपे थे।

स्वामी दयानन्द की अन्य धर्माचार्यों से तुलना करते हुए जो ग्रन्थ उपाध्याय जी ने लिखे उनसे तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहन मिला। उर्दू में इस्लाम पर लिखा गया उनका ग्रन्थ 'मसाबीहुल इस्लाम' को पर्याप्त लोकप्रियता मिली, क्योंकि शिष्ट तथा तर्कपूर्ण शैली द्वारा इस ग्रन्थ में इस्लाम की मान्यताओं की सुन्दर समीक्षा की गई है। 'विधवा विवाह चन्द्रिका', 'कम्युनिज्म', 'हम क्या खायें? घास या मांस?' आदि स्फुट विषयों पर लिखी उनकी कृतियां भी अत्यन्त लोकप्रिय हुई। उपाध्याय जी की आत्मकथा 'जीवन-चक्र' शीर्षक से 1954 में प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने अपने अनुभवों को खुले मन से व्यक्त किया है।

प्रेरक प्रसंग

और उसने जीवन दे दिया

पंडित गंगारामजी आर्यसमाज की एक ऐसी विभूति थे, जिन्होंने दलितोद्धार, अनाथों की रक्षा तथा वेदाप्रचार के लिए अपना सारा जीवन दे दिया। जब वे मुजफ्फरगढ़ (पश्चिमी पंजाब) में ओवरसीयर थे तो उनकी भेंट एक बालविधवा से हुई जिसकी आयु 13-14 वर्ष से अधिक न थी। श्री पण्डित गंगारामजी ने इसे प्रेरित किया कि वह अपना जीवन धर्म-रक्षा तथा स्त्री-जाति की सेवा में लगा दे। पण्डित गंगारामजी के पवित्र जीवन का उस देवी पर प्रभाव पड़ा और वह लोकसेवा के लिए जीवन देने को तैयार हो गई।

पण्डितजी की प्रेरणा से वह जालन्धर में लाला देवराजजी संस्थापक कन्या महाविद्यालय के पास पहुँची। यह 1901 ई. की बात होगी। उसकी माता भी साथ आई। लाला देवराजजी ने उस चौदह वर्ष की बालिका को अपने घर पर अपनी पुत्रियों की भाँति रक्खा। उसकी शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की। आर्यसमाज के कई विद्वान् पण्डित उसे पढ़ाने के लिए रक्खे गये। इस देवी का पूर्व नाम बदलकर लालाजी ने सावित्री देवी रक्खा।

वह कन्या महाविद्यालय (तब स्कूल था) की मुख्य अध्यापिका नियुक्त की गई। यह सेवा वह अवैतनिक करती थीं। स्कूल अब कालेज बन गया। विश्व विद्यालय की ऊँची शिक्षा भी वहाँ दी जाने लगी तो सावित्री देवी इसकी प्रिंसिपल बनाई गई। उसे शिक्षा ही ऐसी दी गई थी कि वह लड़कियों में देश-सेवा तथा धर्म-सेवा का भाव कूट-कूटकर भरती थी।

महाविद्यालय की पत्रिका 'पांचाल पण्डिता' की वह सम्पादिका भी रहीं। कन्या महाविद्यालय के लिए कई पुस्तकें लिखीं इनमें से 'इन्द्रिय दमन' बड़ी लोकप्रिय रही।

इस देवी ने पेशावर, कलकत्ता, बम्बई तथा पूना तक के उत्सवों में व्याख्यान दिये। महाविद्यालय की धूम मचा दी। चन्दा भी लातीं। देश की सब प्रमुख स्त्री-शिक्षा की संस्थाएँ देखीं। कन्या महाविद्यालय का प्रबन्ध बड़ा सुन्दर था। इसका आश्रम (छात्रावास) अपनी उत्तम व्यवस्था के लिए एक उदाहरण माना जाता था। लाला देवराज इस देवी को सती सावित्री कहा करते थे।

वह शरीर से निर्बल ही थी। आवाज में भी कोई रोब न था, परन्तु आत्मा में बल था। उस देवी ने सारा जीवन आर्यसमाज तथा नारीशिक्षा के लिए दे दिया। उसने लम्बी आयु तो नहीं पाई, परन्तु हम एक विद्वान् के शब्दों में कहेंगे-

''एक दीर्घ-जीवन तो सम्भव है अच्छा न हो, परन्तु एक अच्छा जीवन तो निश्चय ही पर्याप्त लम्बा है।''

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्यसमाज प्रीतविहार में शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज प्रीत विहार में 13 से 15 अगस्त 2017 के मध्य आयोजित किया गया। शिविर में अनेक आर्य समाजी एवं गैर आर्य समाजी व्यक्तियों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्य समाज प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी ने कहा कि ''पर्यावरण शुद्धि केवल यज्ञ से ही हो सकती है। पर्यावरण शुद्धि के लिए वैज्ञानिकों ने भी यज्ञ को प्रमाणित किया है। यज्ञ प्रशिक्षणों में जो शोध हुए हैं उनका विस्तार पूर्वक वर्णन आर्य बन्धुओं को दिया जा रहा है। वर्तमान में यज्ञ पाप और पुण्य के नाम से किए जा रहे हैं। उस भ्रांति को दूर करते हुए यज्ञ से वायु मण्डल में जो शुद्धता आएगी वह सारे मानव जाति के लिए लाभ दायक है। यदि विधिवत् तरीके से यज्ञ किया जाए जैसे जब अग्नि पूर्ण रूप से प्रज्ज्वलित हो जाए तभी उसमें

पर्यावरण शुद्धि केवल यज्ञ से ही होगी - सुरेन्द्र रैली, प्रधान

उचित मात्रा में सामग्री आदि डालनी चाहिए तब तो पुण्य ही पुण्य है लेकिन यदि अग्नि मंद होगी और सामग्री की मात्रा ज्यादा होगी या सामग्री शुद्ध नहीं होगी तो पाप ही पाप है। श्री सुरेन्द्र रैली जी ने कहा कि घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ

आगामी यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम - सागरपुर एवं रानीबाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा आगामी पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर दिनांक 1-3 सितम्बर तक आर्यसमाज सागरपुर में तथा 7-9 सितम्बर को आर्यसमाज रानी बाग मेन बाजार में तक आयोजित किए जा रहे हैं। पंजीकरण एवं जानकारी हेतु श्री सुखबीर सिंह आर्य जी (09350502175-सागरपुर) अथवा श्री जोगेन्द्र खट्टर जी (09810040892 -रानीबाग) से सम्पर्क करें। - *संयोजक*

योजना मानव जाति के लिए बहुत बड़ा पुण्य का कार्य है जिससे प्राणि मात्र तो लाभान्वित होंगे ही साथ ही पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में भी बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। यज्ञ से होने वाले लाभों की जानकारी सिर्फ आर्य समाजियों तक ही सीमित न रखते हुए समस्त मानव जाति में इसका प्रचार-प्रसार करना होगा तभी हम 'स्वच्छ भारत' का सपना साकार कर सकेंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने यज्ञ के वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्राप्त परिणाामों को प्रोजेक्टर पर दिखाकर सभी महानुभावों को यज्ञ से पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों को दर्शाया।

शिविर को सफल बनाने में आर्य समाज प्रीतविहार के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली, आर्य वीर दल के शिक्षक श्री प्रेम आर्य, श्री सुनहरी लाल यादव, श्री संदीप आर्य, आचार्य सत्य प्रकाश आर्य ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

-सतीश चड्ढा, संयोजक

★ अपनी आर्यसमाज में पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगवाने हेतु श्री सतीश चड्ढा जी, संयोजक (9540041414) से सम्पर्क करें।
★ एक साथ 100 लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था। ★ न्यूनतम डेढ़ घंटे के चार सत्र अथवा दो घंटे दो के सत्र का कार्यक्रम। - महामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के अन्तर्गत संचालित

"सहयोग" योजना का आदिवासी क्षेत्र बामनिया में क्रियान्वयन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम एवं आर्य समाज नई दिल्ली के द्वारा समाजसेवी माननीय महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से '' सहयोग '' योजना का क्रियान्वयन बामनिया नगर में किया गया। प्राचार्य प्रवीण अत्रे ने बताया कि इस योजना के अन्तर्गत नई दिल्ली से लोगों के जनसहयोग से नये एवं पुराने कपड़े जरूरतमन्द लोगों तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया गया है। इस योजना का शुभारम्भ नई दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान किया गया था। इसी कड़ी में महाशय धर्मपाल (MDH) दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के प्राचार्य श्री प्रवीण अत्रे एवं बच्चों द्वारा नई दिल्ली से भेजे गए दो हजार से अधिक बच्चे, बड़े एवं महिलाओं के कपड़ों का वितरण रेल्वे स्टेशन के पास शनिवार को किया गया। यह भी बताया गया कि प्रतिमाह संस्था द्वारा इस तरह कपड़ों का वितरण किया जायेगा। प्राचार्य ने महाशय जी की भावनाओं के अनुरूप सभी बच्चों, पालको एवं क्षेत्र के लोगो से अपील कर कहा कि ऐसे घरों की अलमारियों में रखे अनुपयोगी कपड़े जरूरतमन्दों को दान कर लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाई जा सकती हैं। इस अवसर पर आचार्य धर्मवीर शास्त्री, स्टाफ एवं बच्चे उपस्थित थे। इस योजना के सफल क्रियान्वयन में महामंत्री श्री जोगेन्दर खट्टर, शिक्षा निदेशक श्रीमति अनु वासुदेवा, का विशेष योगदान रहा।

विशेष निवेदन : यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। - *जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
5,10,20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

Veda Prarthana - 12

Dear God, Help Me Fulfill My Vow to Follow Truth in Life

- Acharya Gyaneshwarya

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।।

Agne vratpate vratam charishyami tat shakeyam tanme radhyatam. Idamaham anritat satyam upaimi

(Yajur Veda 1:5)

Agne our Ultimate Leader, Supreme Light that enlightensr us, vratpate Judge and the Master Keeper of all vows, vratam as I take this solemn vow, charishyami please bless me so that tat shakeyam I may fulfill my vow and tanme that vow radhyatam may be successful. Idam aham with Thy bles ings I now pledge anritat to reject all falsehood and satyam upaimi adhere to truth for the rest of my life.

Dear God You are called Agne in the Vedas because You alone are the Ultimate Source of our enlightenment that is present everywhere. The word Agne also means that God takes us forward in the right path and as such implies that God is our Ultimate Leader and Guide. The other attribute of God emphasizd in this mantra is that God is the Supreme Master Keeper of Vows because all creation abides by His universal rules and even God abides by those same rules. God does not break His rules to please His devotees or followers. There is never a shortcoming or deficiency in any of God's works e.g. creation, maintenance and dissolution of the manifest universe; giving the knowledge of the Vedas at the beginning of mankind; giving appropriate rewards or punishment to individual souls based on their karmas (deeds); giving us human beings inspiration when we do something good and virtuous as wel as creating in our mind doubt, shame and aversion when we even think of doing something wrong or sinful. Everything Omnipresent God does is perfect and done in an orderly manner.

O Master Keeper of Vows! We human beings often take vows and/or make pledges to follow virtuous habits and discard wrong or evil habits, however, due to laziness, carelessness or forgetfulness we become lax and short change or abandon our vows and pledges. Also, if we encounte some difficulties or obstacles in maintaining our vows we cut corners or completely stop fulfilling our vows and pledges. Dear God, it has now become completely clear to me that if we want happiness, peace, contentment, security and freedom in the world we will have to follow Your commands and follow virtuous path in life. If we follow the teachings of Vedas, and incorporate them in our daily lives with full commitment and effort, as well as stay alert and careful in not deviating from them, we will certainly achieve happiness and fulfillment in life. On the other hand, if we ignore Your commands and virtuous teachings of the Vedas we are sure to suffer unhappiness and ill consequences of our actions. These are Your firm rules and nobody can escape them.

Sometimes human beings think that they are super smart and looking at the surrounding circumstances, develop their own convenient rules even though they are at variance from God's eternal rules of truth and virtue described in the teachings of the Vedas and related scriptures. The reason for this behavior is that we do not have fou faith and devotion in God and God's teachings. We think these teachings are old and not applicable to us whereas we now know better and can develop our own convenient rules of conduct. This, however, is the root cause of our mistakes in life.

O SupremeLight, our Ultimate Leader and Guide from this moment on I have made a firm resolve that in future I will follow Your teachings as described in the Vedas and related scriptures such as Upanishads and Darshans. I will follow the teachings of rishis and other genuine seers. I take a vow that from now on I will do my very best to follow truth, dharma, virtue, austerity and generosity in life and do selfless deeds for others. I also pledge to refrain from untruth or lying, immoral or evil habits (adharma), unfairness or injustice, Jealousy and greed. Dear God, I now fully appreciate and understand that I cannot follow Your teachings and progress in my meditation to reach my goal of attaining Your realization until I have a firm resolve and detmination as well as a commitment to withstand any hardship I encounter along the path.All of the truly saintly persons who have existed in the past had a firm resolve and determination in order to succeed in their goal of fulfilling the pledges or vows they made. Dear God, similarly, I am taking a solemn vow today to always follow Your teachings and truth in life in the future.

Dear Divine Being, I have so far realized that to fulfill one's vows and pledges, one often has to struggle against and overcome a variety of personal shortcomings such as greed, laziness, carelessness, forgetfulness, lust, blind attraction or attachment to others (moh), jealousy and false pride. In addition, one has to become strong and determined to be able to withstand obstacles others place in our path such as temptation, opposition or false accusations, insults etc. etc. Similarly, one has to learn to withstand personal physical and emotional hardships such as cold and heat; hunger when food is not available; sorrows, suffering and tragedies in personal or family life. Dear God, I know from my past life experiences that I have limited knowledge, wisdom and strength. Therefore, I am incapable of fulfilling my vows and pledges on my own without Your help.

Dear God You are Vratpate-the Master Keeper of all vows, You always follow eternal laws, the universe is created and exists according to Your rules. Therefore it is my humble prayer to You to please strengthen my soul's resolve so that with Your help and guidance I may also follow Your teachings and succeed in fulfilling my vows. Dear God, inspire me and fill me up with such courage, strength, determination, enthusiasm, bravery and wisdom so that under no circumstancs may I lean towards or bow before untruth, may I never succumb to or be defeated by sin, and may I never accept injustice. Instead, may I always defend truth with my soul, mind, words, body and wealth. With Your grace, may I even be willing to sacrifice my life in following, promoting and defending truth. Henceforth, I will act accordingly with my thoughts words and deeds to whatever I know, see, hear and learn about truth. Dear God, I know that strictly folleowing truth in all aspects of life under all circumstances is like walking bare-feet on the edge of a sharp knife or sword. However, when one has You as one's Closest Companion, and Friend, one directly obtains knowledge, wisdom, strength, courage and bravery from You, then one is capable of doing so many positive things that previously seemed impossible to carry out. Nothing is difficult for those whom You guide and help. Dear God, I have full faith that You will inspire and assist me in fulfilling my vow and pledge of adopting truth in all aspects of my life.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 28 **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

अनुष्टुप छन्द : इस छन्द को श्लोक भी कहते हैं। इसके अनेक भेद हैं, परन्तु जिसका अधिकतर व्यवहार हो रहा है, उसका लक्षण इस प्रकार से है:

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चिमम्।
द्विचतु: पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययो:।।

यह छन्द अर्धसमवृत्त है । इस के प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं । पहले चार वर्ण किसी भी मात्रा के हो सकते हैं। छठा वर्ण गुरु और पाँचवाँ लघु होता है। सम चरणों में सातवाँ वर्ण ह्रस्व और विषम चरणों में गुरु होता है, जैसे:

।ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ
लोकानुग्रहकर्तार:, प्रवर्धन्ते नरेश्वरा:।
लोकानां संक्षयाच्चौव, क्षयं यान्ति न संशय:।।

पंचतंत्र मित्रभेद/169

गीता, रामायण, महाभारत आदि में इसी छन्द का बाहुल्य है ।

शार्दूलविक्रीडितम् : इसके प्रत्येक चरण में 19 वर्ण निम्न लिखित क्रम से होते हैं:

सूर्याश्वैर्यदि म: सजौ सततगा: शार्दूलविक्रीडितम् ।

सूर्य (12) और अश्व (7) पर जिसमें यति होती है और जहाँ वर्ण मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और एक गुरु के क्रम से रखे जाते हैं, वह शार्दूलविक्रीडित छन्द होता हैय जैसे:

ऽऽऽ । ऽ। ऽ। ऽऽऽ । ऽ ऽ। ऽ
रेरे चातक ! सावधान-मनसा मित्र क्षणं श्रूयता।
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वे तु नैता शा:।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब:हि दीनं वच: नीति./47

इस प्रकार यहाँ 3 मात्रिक और 12 वर्णिक महत्त्वपूर्ण छन्दों का परिचय दिया गया है ।

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज रोहतास नगर का 52वां श्रावणी पर्व

आर्य समाज रोहतास नगर, शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली के तत्त्वावधान में 52वां श्रावणी पर्व 14 से 17 सितम्बर 2017 के बीच आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ एवं पं. रघुनाथ देव 'वैदिक भूषण' जी का प्रवचन होगा।

-आर्य विकास कुमार शर्मा

आर्य समाज बड़ौदरा में 71 वां स्वतंत्रता दिवस सम्पन्न

आर्य समाज बड़ोदरा के तत्त्वावधान में विश्राम बाग में 15 अगस्त कों प्रतिदिन की भांति यज्ञ ओर वेद पाठ किया गया तदुपरान्त आर्य समाज के प्रधान एवं सदस्यों द्वारा तिरंगा व ओ३म् ध्वज फहराया गया। राष्ट्रगान व ओ३म् ध्वज गीत के उपरान्त आजादी के लड़ाई में शहीद हुए क्रांतिकारियों एवं शहीद हुए महान नेताओं को सबने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। *-राजेन्द्र पाल वर्मा, अध्यक्ष*

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को कम्प्यूटर पर डेटा कलैक्ट करने, फोन अटेन्ड करने हेतु अटैंडेंट, हिन्दी टाइपिस्ट एवं सम्पादकीय क्षमता व रुचि रखने वाले महानुभावों आवश्यकता है। योग्य इच्छुक अभ्यार्थी अपना आवेदन पत्र, प्रबन्धक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर मेल कर देवें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

''लव जिहाद'' के रास्ते में ....

अगले दिन दुकानों में गिनती की प्रतियां ही रह गईं थीं।

राजनैतिक स्तर पर चांडी के बयान की आलोचना के बाद सैकुलर मीडिया ने वहां के मुख्यमंत्री की इस स्पष्ट स्वीकारोक्ति को पूरी तरह अनदेखा कर दिया था। दक्षिण भारत के इस मामले को उत्तर भारत में बड़े स्तर पर हवा तो मिली लेकिन इस लव जिहाद को राजनीतिक एजेंडा बताकर लोग कन्नी काटते नजर आये। लेकिन केरल में इस गुप्त एजेंडे के तहत प्रेम जाल में फांसकर हिन्दू युवतियों से निकाह करके उन्हें धर्मान्तरित करने और गरीबों को लालच देकर मतांतरित करने का षड्यंत्र जारी रहा। 2012 में छपी साप्ताहिक पत्रिका के आंकड़े बताते हैं कि केरल में हर महीने 100 से 180 युवतियां धर्मान्तरित की जा रही हैं।

उसी दौरान भारत की एक बड़ी पत्रिका के अनुसार मालाबार की एक इस्लामी काउंसिल के 2012 तक के धर्मांतरण के आंकड़े बताते हैं कि 2007 में 627 लोग मुस्लिम बने, जिसमें से 441 हिन्दू थे और 186 ईसाई. 2008 में 885 में से 727 हिन्दू थे, 158 ईसाई। 2009 में 674 में से 566 हिन्दू थे, 108 ईसाई। 2010 में 664 में से 566 हिन्दू थे, 98 ईसाई। 2011 में 393 में से 305 हिन्दू थे, 88 ईसाई। एक बात यहाँ स्पष्ट कर दूँ धर्मान्तरित होने वालों में बड़ी संख्या युवतियों की रही है।

इन सब आंकड़ों के बीच अजीब बात है कि गैर मुस्लिमों को फुसलाने के साथ ही, अलगाववादी गुट मुस्लिम युवतियों को किसी गैर मुस्लिम लड़के से बात तक नहीं करने देते। ये कट्टरवादी तत्व मुस्लिम महिलाओं को हिन्दुओं के घरों में काम करने से रोकते हैं। साप्ताहिक की रिपोर्ट एक दिलचस्प आंकड़ा देती है कि 2008 से 2012 तक, महज 8 मुस्लिम महिलाओं ने ही गैर मुस्लिम पुरुषों से प्रेम विवाह किया है। मतलब साफ है कि केरल के सभी 14 जिलों में लव जिहाद जोरों पर है।

मामला सिर्फ केरल ही नहीं अब उत्तर भारत में भी अपने पैर पसार चुका है जिसका सबसे बड़ा खुलासा वर्ष 2014 में नेशनल शूटर तारा शाहदेव के मामले में देखा गया था। लेकिन उस समय भी सैकुलरवादी नेताओं और मीडिया ने इसे झूठा बताने का कार्य किया था जो अब सीबीआई जाँच में सच पाया गया है। असल में यह एक सोचा समझा धार्मिक षड्यंत्र है। इसे केरल की हदिया वाले मामले में आसानी से समझा जा सकता है कि आरोपी युवक शफीन क्या इतना धन या राजनैतिक हैसियत रखता है कि वह महंगे वकील को अपनी पैरवी के लिए खड़ा कर सकता है? इससे भी साफ समझा जा सकता है शफीन के पीछे किन बड़ी राजनैतिक और धार्मिक संस्थाओं का हाथ है? *- विनय आर्य, महामन्त्री*

20वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाब बाग, उदयपुर (राज.) में 1 से 6 नवम्बर 2017 के बीच 20वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। आर्यजन कृपया अभी से अपने परिवारीजनों इष्टमित्रों का रिजर्वेशन करा लें तथा सुव्यवस्था हेतु हमें मो. नं. 9829063110, 9314535379 पर अवश्य सूचित करें *- मन्त्री*

134 वां ऋषि बलिदान समारोह एवं योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में 134 वां ऋषि बलिदान समारोह 27 से 29 अक्टूबर के बीच आयोजित किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेद गोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता एवं वैदिक विद्वान, विदुषियों एवं कार्यकत्ताओं को सम्मानित किया जाएगा। सभा द्वारा 8 से 15 अक्टूबर तक योग-साधना शिविर का आयोजन भी किया जाएगा। शिविर में भाग लेने के लिए शिविरार्थी मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज अजमेर, दूरभाष 0145-2460164 पर सम्पर्क कर सकते हैं। *- ओम मुनि, मंत्री*

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाइन सहारनपुर के तत्त्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह में महिला सम्मेलन अन्तर्गत विश्व विख्यात रचनाकार एवं भजनोपदेशक पं. सत्य पाल 'पथिक' का अभिनन्दन किया गया। उन्होंने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द को उद्धृत करते हुए कहा कि ऋषि ने राष्ट्र उत्थान के लिए 17 बार विष पिया, राजा-महाराजों के दमनचक्र झेले, ईंट-पत्थर खाये। आज उनके शिष्य का अद्भुत स्वागत यह महर्षि की नीतियों का प्रतिफल है। आचार्य सोमदेव ने विद्दोत्मा का उदाहरण देते हुए नारी की सशक्त भूमिका को अनिवार्य बताया। पं. विरेन्द्र मिश्र ने नारी उत्थान सम्बन्धित भजनों से श्रोताओं को भावुक कर दिया। *-रविकान्त राणा, मंत्री*

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित रानी बाग, सैनिक विहार, धनश्री, बामनिया तथा अन्य स्थानों पर संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों के लिए प्रबन्धकों, सहायकों, अध्यापक-अध्यापिकाओं, वार्डन एवं केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त/आर्यसमाजी पृष्ठभूमि से जुड़े महानुभाव युवा/वानप्रस्थी(पूर्ण सक्षम अनुभवी महानुभाव को विशेष प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर ई मेल करें या महामन्त्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, द्वारा/ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पते पर भेजें- *जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

शोक समचार

भजनोपदेशक श्री ज्योति प्रसाद को पुत्र शोक

आर्य प्रादेशिक सभा मंदिर मार्ग के भजनोपदेशक श्री ज्योति प्रसाद जी के मात्र 37 वर्षीय सुपुत्र श्री सुधाकर शर्मा का 4 अगस्त 2017 को निधन हो गया वे पीलिया रोग से पीड़ित थे। श्री सुधाकर अपने पीछे पत्नी व दो बच्चों को छोड़ गये हैं। 11 अगस्त को आर्य समाज मन्दिर भैंरा एन्क्लेव में श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई जिसमें विभिन्न समाजों के महानुभावों एवं पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्री हरिसिंह आर्य जी को भ्रातृशोक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य जी के छोटे भाई मास्टर यशपाल जी का 23 अगस्त, 2017 को अकस्मात् देहावासन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 अगस्त, 2017 को सामुदायिक भवन डाबड़ी, नई दिल्ली में दोपहर 12 से 2 बजे सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली स्थित अनेक आर्यसमाजों, आर्य वीर दल शाखाओं के अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती राजकुमार आर्या का निधन

आर्यसमाज शाहगंज, बालाजीपुरम्, आगरा की मन्त्राणी श्रीमती राजकुमारी आर्य जी का 26 अगस्त को निधन हो गया।

वे अपने पीछे अपने पति, तीन सुपुत्र एवं एक सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए है।

एडवोकेट जोगेन्द्र सिंह चौहान को मातृशोक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री जोगेन्द्र सिंह चौहान जी की पूज्य माताजीश्रीमती निवेदिता देवी जी का 88 वर्ष की आयु में 28 अगस्त को निधन हो गया।

श्री कृष्ण देव आर्य जी नहीं रहे

आर्यसमाज सस्वती विहार के पूर्व प्रधान श्री कृष्ण देव जी का 23 अगस्त को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग शमशानघाट पर किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 अगस्त को आर्यसमाज सरस्वती विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

प्रो. रामविचार आर्य जी का निधन

आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान प्रो. राम विचार आर्य जी का 23 अगस्त को अकस्मात् निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 अगस्त को पी.डी.एम. स्कूल बहादुरगढ़ में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 28 अगस्त, 2017 से रविवार 3 सितम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 अगस्त/1 सितम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 अगस्त, 2017

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली द्वारा आयोजित

देहरादून पुस्तक मेला : 28 अगस्त से 5 सितम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के सहयोग से परेड ग्राउंड, देहरादून में आयोजित देहरादून पुस्तक मेले में वैदिक पुस्तक स्टाल लगाया जा रहा है यह मेला दिनांक 28 अगस्त से 5 सितम्बर के मध्य आयोजित किया जा रहा है। मेले का समय प्रात: 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु श्री राजेन्द्र आर्य मो. 09897880930 पर सम्पर्क करें। आर्यजन भारी संख्या में सहयोगियों के साथ पहुंचकर अधिकाधिक साहित्य खरीदें तथा जन साधारण को वैदिक साहित्य खरीदने के लिए पुस्तक मेले पहुंचने के लिए प्रेरित करें, जिससे कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ सके।– ***डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रधान, उत्तराखंड सभा***

पुरोहितों/धर्माचार्यों की आवश्यकता

ऐसे महानुभाव जो गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली की आर्यसमाजों में पुरोहित/ धर्माचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देना चाहते हैं। वे कृपया आवेदन पत्र नाम, पते, मोबाईल नं., ईमेल, योग्यता आदि लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें –

अध्यक्ष/संयोजक, वैदिक प्रचार समिति

द्वारा/दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

प्रतिष्ठा में,

बीमारी से बचाव हेतु 2785 लोगों ने पिया औषधीय काढ़ा

आर्य समाज कोटा एवं संत कंवरराम धर्मशाला एवं पञ्जलि योग समिति कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में गुमानपुरा स्थित संत कंवर राम सिंधी धर्मशाला परिसर में श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा, आर्य समाज प्रधान; श्री श्योराज वशिष्ठ, पञ्जलि के जिला अध्यक्ष श्री प्रदीप शर्मा की निगरानी में कोटा में फैल रहे डेंगू व स्वाइन फ्लू की रोकथाम हेतु रोग प्रतिरोधक औषधीय काढ़ा वितरित किया गया। धर्मशाला प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री गिरधारी पंजवानी ने बताया कि उक्त औषधीय काढ़ा कोटा में बढ़ रहे डेंगू और स्वाइन फ्लू के बढ़ रहे प्रकोप से लोग बुरी तरह भयभीत हैं इसी को देखते हुए ये औषधीय काढ़ा महिलाओं, बच्चों व पुरुषों को पिलाया गया। प्रात: 11 बजे से सायंकाल तक लगभग 2785 लोगों को यह काढ़ा वितरित किया गया। –***अर्जुन देव चड्ढ़ा***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र

100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज) के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह